ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 16 अंक 19 कुल पृष्ठ-8 7 से 13 जनवरी, 2021 दयानन्दाब्द 197 सृष्टि सम्वत् 1960853121 सम्वत् 2077 मा. शु.-08

आर्य भजनोपदेशक परिषद् का साधारण अधिवेशन एवं पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ का

पुनः शुभारम्भ समारोह भव्यता के साथ सम्पन्न

आर्य भजनोपदेशक तथा गुरुकुल आर्य समाज की रीढ़ हैं इन्हें शक्ति सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित बनाना अत्यन्त आवश्यक है

– स्वामी आर्यवेश

आर्ष शिक्षा प्रणाली से वैदिक विद्वान तैयार किये जा सकते हैं

– स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

आर्ष शिक्षा मनुष्य के समन्वित विकास के लिए आवश्यक है

– प्रो. विट्ठलराव आर्य

कन्या गुरुकुल का पुनः प्रारम्भ करके हो रही है अत्यन्त प्रसन्नता

– डॉ. सोमदेव शास्त्री

नये आर्य भजनोपदेशक तैयार करने की जरूरत है

– सहदेव बेधड़क

आर्य भजनोपदेशक निधि स्थापित की जायेगी

– कैलाश कर्मठ

आर्य समाज के भजनोपदेशकों का राष्ट्रीय संगठन भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् का अधिवेशन एवं पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ का पुनः प्रारम्भ समारोह 1 से 3 जनवरी, 2021 तक बड़े उत्साह के वातावरण में भव्यता के साथ आयोजित किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, गुरुकुल आमसेना उड़ीसा के आचार्य स्वामी व्रतानन्द जी, सार्वदेशिक सभा के महामंत्री प्रो. विट्ठलराव जी, सार्वदेशिक सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मंत्री श्री विनय आर्य, श्री विजय शर्मा भीलवाड़ा, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द जी एडवोकेट, मिशन आर्यावर्त न्यूज बुलेटिन के निदेशक तथा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र जी, स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती टिटौली, आर्य समाज सांताक्रुज मुम्बई के मंत्री श्री रमेश सिंह, वैदिक मिशन मुम्बई के मंत्री श्री संदीप आर्य, गुरुकुल पौंधा के आचार्य श्री धनंजय जी, श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री मुम्बई, डॉ. सीमा चित्तौड़गढ़ आदि के अतिरिक्त आचार्य कोमल कुमार गुरुकुल कोसरंगी छत्तीसगढ़, श्री प्रणव शास्त्री मुम्बई, श्री हरदेव सिंह आर्य शिवगंज आदि के अतिरिक्त आर्य भजनोपदेशक परिषद् के अध्यक्ष श्री सहदेव सिंह बेधड़क, उपाध्यक्ष श्री योगेश आर्य, महामंत्री डॉ. कैलाश कर्मठ, कोषाध्यक्ष श्री नरेश आर्य, वैद्य नन्दराम आर्य, श्री धनीराम बेधड़क आदि ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम के संयोजन का दायित्व प्रसिद्ध विद्वान तथा वैदिक मिशन मुम्बई के अध्यक्ष डॉ. सोमदेव शास्त्री जी ने संभाला। उनके साथ श्री जीववर्धन शास्त्री, श्री विक्रम सिंह निम्बाहेड़ा, श्री सोमदेव शास्त्री व श्री भूपेश शास्त्री गुरुकुल गौतमनगर एवं आर्य युवक परिषद् तथा आर्य वीरदल के कार्यकर्ताओं ने व्यवस्था को बड़ी कुशलता के साथ संभाला। इस त्रि–दिवसीय कार्यक्रम में सभी प्रमुख आर्य भजनोपदेशकों ने भजनों तथा विद्वान् एवं नेताओं ने अपने व्याख्यानों के माध्यम से आर्यजनों का ज्ञानवर्द्धन किया।

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

यज्ञ–प्रवचन व दान का पर्व

मकर संक्रान्ति

– डॉ. अशोक आर्य

पूर्व पीठिका

वैसे तो प्रत्येक पर्व की अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि है। वह व्यक्ति और राष्ट्र के लिए कोई जीवनदायी सन्देश लेकर आता है। इसी प्रकार संक्रान्ति का पर्व हमें नीरस जीवन में रस, ओज, शान्ति का संदेश देता है। वैदिक संस्कृति का शाश्वत सन्देश है – 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' हम अन्धकार से प्रकाश की ओर बढ़ें। अपने जीवन में यदि उत्थान करना चाहते हैं तो आशावादी होना अत्यन्त आवश्यक है। मकर संक्रान्ति हमें आशावादी होना भली प्रकार सिखाती है। उदाहरणतया मकर संक्रान्ति के अवसर पर शीत अपने यौवन पर होता है दिन की अब तक यह अवस्था थी कि सूर्यदेव उदय होते ही अस्ताचल के गमन की तैयारियाँ आरम्भ कर देते थे, मानों दिन रात्रि में लीन ही हुआ जाता हो। रात्रि अपनी देह बढ़ाती ही चली जाती थी। अन्त को उसका भी अन्त आया। यह प्राकृतिक परिवर्तन हमें जीवन में आशावाद का पाठ पढ़ाता है। हमारे सोये हुए आत्म विश्वास को जगाता है और कहता है कि यदि हमारे जीवन में कुछ शैथिल्य, निरुत्साह आदि दोष आ गए हैं, हमारी दीन–हीन अवस्था सदैव रहने वाली नहीं, 'जो बीती सो बीती लेकिन बाकी उम्र संभालू मैं .... ''ये भजन की पंक्ति इस पर्व के साथ विशेष जुड़ी हुई। आइये, हम उठ खड़े हों और अपने जीवन में संक्रान्ति लाएँ।

परिचय

आओ हम जानें कि वास्तव में संक्रान्ति है क्या?वास्तव में इसे जानने के लिए हमें पृथ्वी चक्कर का अध्ययन करना होगा। पृथ्वी चक्र दो प्रकार का होता है। एक सूर्य के चारों तरफ, इस चक्र को हम सौर वर्ष के नाम से जानते हैं। दूसरा चक्कर पृथ्वी अपने चारों तरफ घूमती है, इसे क्रान्ति–वृत्त का नाम दिया गया है। क्रान्ति वृत्त को 12 भागों में बांटा गया है इन्हें आकाशीय पिण्डों के आधार पर नाम इस प्रकार दिए गए हैं। मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन। ज्योतिषी लोग इन्हें राशियों के नाम से पुकारते हैं। पृथ्वी का एक राशि से दूसरी राशि में गमन ही संक्रान्ति नाम से जाना जाता है।

अभिप्राय

सूर्य छः महीने तक क्रान्तिवृत्त से उत्तर की ओर उदय होता है तथा छः माह तक दक्षिण की तरफ निकलता है इन छः मासिक अवधियों को अपना नाम देते हुए उत्तरायण तथा दक्षिणायन नाम दिए गए हैं, क्योंकि उत्तरायण में प्रकाश काल अधिक तथा रात्रि काल छोटा होता है इस कारण इसका विशेष महत्त्व है। जिस दिन उत्तरायण का आरम्भ होता है उसे मकर संक्रान्ति का नाम दिया गया है।

महत्त्व

यह दिन अत्यधिक सर्दी अथवा लम्बी रात्रि के पश्चात् प्रकाश की अवधि बढ़ाने वाला होता है। इसलिए इन दिनों वृद्ध लोग प्रायः बिस्तरों में छुपे रहते हैं। उन्हें ईश्वर इस पर्व के माध्यम से यह उपदेश देता है कि वह यज्ञ करें, अग्नि के समीप बैठें, वेद स्वाध्याय करें, दूसरों को उपदेश दें। स्वयं अपना ज्ञान बढ़ाएँ तथा दूसरों के ज्ञान में भी अपने प्रवचनों द्वारा वृद्धि करें।

दान का पर्व

इस पर्व का महत्त्व जहाँ वेद वचनामृत का दान करना है व यज्ञ–कार्य कर अपने शरीर को गर्म बनाए रखना है, वहाँ दान करना भी इस पर्व का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। यज्ञ में तिल व मीठे की आहुतियाँ न केवल दी ही जावें बल्कि तिल व मीठे के लड्डू दान भी दिए जावें। ताकि जो निर्धन लोग इन चीजों का उपभोग करने में अपने आपको अक्षम समझते हैं वह भी सर्दी में अपने स्वास्थ्य की रक्षा कर सकें। इतना ही नहीं इस दिन निर्धन लोगों को गर्म वस्त्र, जूते आदि भी दान करने की परम्परा है ताकि निर्धन लोगों की ठिठुरन पैदा करने वाली सर्दी से रक्षा की जा सके।

देश भर में इस दिन यज्ञ व दान भारी मात्रा में करने की परम्परा है। बड़े–बड़े यज्ञ होते हैं। तिलों व मिष्ठान की आहुतियाँ दी जाती हैं। गर्म वस्त्र बाँटे जाते हैं। यह भी दिखने में आता है कि विभिन्न व्यापारिक संगठन इस दिन बड़े–बड़े लंगर लगाते हैं। इन लंगरों में जो पकवान निर्धनों में बांटने के लिए वह लोग बनाते हैं, उनका बड़ा भाग वह व उनका परिवार स्वयं ही प्रयोग कर लेता है। यह अच्छा नहीं। यह पकवान निर्धन लोगों को ही दिए जाने चाहिए ताकि उनकी सर्दी से रक्षा हो सके। अनेक आर्य समाजें भी इन दिनों विशाल यज्ञ कर दान की परम्परा को चलाए हुए हैं। आर्य समाज गिदड़ बगहा भी इस दिन विशेष यज्ञ के पश्चात् विद्वानों से न केवल वेद–प्रवचन करवाते हैं अपितु निर्धनों को गर्म वस्त्र बाँटने की परम्परा भी अबाध रूप से चला रही है।

महाराष्ट्र में इस दिन तिलगूल, नामक हलवा बांटते हैं। सौभाग्यवती स्त्रियाँ तथा कन्याएँ अपनी सखियों को हल्दी, रोली, तिल व गुड़ बाँटती हैं। यह संतान वृद्धि के लिए उत्तम उपहार है। ग्रीक लोगों में भी ऐसी ही परम्परा थी। रोमन लोग भी इस दिन अंजीर, खजूर व शहद बाँटते थे। इस पर्व पर अग्नि दीपक स्वरूप घी बांटने की भी परम्परा रही है।

पंजाब में संक्रान्ति

पंजाब में यह पर्व देश से कुछ हटकर एक के स्थान पर दो दिन मनाया जाता है। पहले दिन को लोहड़ी के नाम से जानते हैं। जिसमें अग्नि जलाई जाती है तथा तिल के लड्डू इसमें जलाए जाते हैं। तपे हुए गन्ने भूमि पर पटके जाते हैं। यह यज्ञ का ही बिगड़ा रूप है। अगले दिन माघी अथवा मकर संक्रान्ति पर्व मनाया जाता है। पता नहीं पंजाब में यह पर्व दो दिन क्यों व कब से मनाना आरम्भ हुआ। राष्ट्रीय एक–रूपता लाने के लिए इसमें सुधार कर इसे एक दिवसीय बनाना आवश्यक है।

सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

प्रत्येक पर्व सदैव राष्ट्र व व्यक्ति के लिए कोई न कोई जीवनदायी सन्देश लेकर आता है। अतः इसका सांस्कृतिक महत्त्व भी होता है।

वैदिक संस्कृति का शाश्वत सन्देश

वैदिक अथवा भारतीय संस्कृति सदैव प्रकाश की उपासक रही है। भारत शब्द का अर्थ ही देखें। इसके प्रथम शब्द 'भा' का अर्थ है ज्ञान या प्रकाश की साधना तथा 'रत' का अर्थ है लगा हुआ। अतः जो देश अथवा उसके लोग ज्ञान व प्रकाश के प्रसार के लिए प्रयास करते हैं उसे ही भारत कहते हैं।

आशावादी संस्कृति

भारतीय संस्कृति आरम्भ से ही आशावादी रही है। आज तक रात्रि लम्बी व ठण्डी थी किन्तु संक्रान्ति के इस दिन मकर ने इसको निगल लिया अर्थात् आज से रात्रि कम व दिन लम्बे होने लगेंगे। यह परिवर्तन ही हमारी आशा है। इससे हमारा सोया हुआ आत्म विश्वास जागता है तथा हमें शैथिल्य, निरुत्साह एवं हमारी दीन–हीन अवस्था को दूर करने का सन्देश देता है। अतः हमें अपने जीवन में भी संक्रान्ति लाने को सदैव तत्पर रहना चाहिए।

देवयान

इस काल को 'देवयान' भी कहा गया है। इसी दिन की प्रतीक्षा में भीष्म पितामह शरशैय्या पर रहे तथा इसी दिन ही उन्होंने अपने प्राणोत्सर्ग किए।

सम्यक् क्रान्ति

संक्रान्ति का अर्थ है सम्यक क्रान्ति। यह जीवनचर्या व परिवारिक चर्या में परिवर्तन लाने का उपदेश देती है। जिससे हमारा देश, समाज तथा धरती पर नवीन प्रकाश ज्योतिर्गमय होगा।

विवेक की पूजा

यह पर्व हमें बताता है कि हमारा प्रत्येक व्यापार व व्यवहार, विवेक युक्त हो। हम उदार हों, यज्ञ शील हों, मिल बांटकर खाएँ तथा दानशील बनें। कविरत्न सिद्धगोपाल काव्यतीर्थ के शब्दों में –

उत्तर अयन इसी तिथि को है,
सविता का सुप्रवेश हुआ।
मान दिवस का इस ही कारण,
अब से है सविशेष हुआ।
वेद प्रदर्शित देवयान का,
जगती में विस्तार हुआ।
उत्सव यह संक्रान्ति मकर का,
जनता में सुप्रसार हुआ।
तिल के मोदक, खिचड़ी,
कंबल,
आज दान में देते हैं।
दीनों का दुःख दूर भगाकर,
उनकी आशिष लेते हैं।
शीतल, सुगन्धित सुसाकल्य
से,
होम यज्ञ भी करते हैं।
हिय से आवृत नभ मण्डल
को,
शुद्ध वायु से भरते हैं।

उपसंहार

यह उत्सव प्रकाशोत्सव स्वरूप सुख–समृद्धि बढ़ाने वाला है। इस दिन हमें स्नान कर, नए वस्त्र पहन, वेद–मन्त्रों के साथ यज्ञ में तिल के लड्डुओं की आहुति देकर यह लड्डू तथा गर्म वस्त्र निर्धनों में बाँट कर सर्दी से उनकी रक्षा करनी चाहिए।

– आर्य कुटीर, मित्र विहार, मण्डी डबवाली, हरियाणा

वैदिक नित्य कर्म विधि

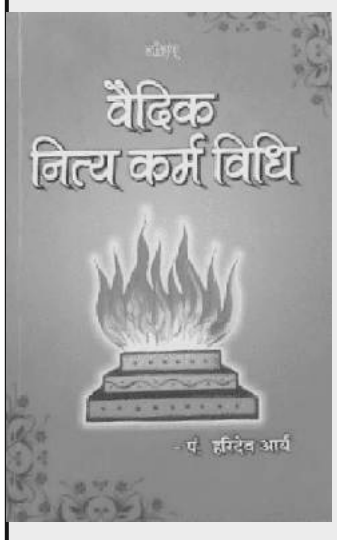

– लेखक आचार्य श्री पं. हरिदेव आर्य एम.ए.

इस पुस्तक में प्रातःकाल के मन्त्र, संध्या, ईश्वर स्तुति, प्रार्थना मंत्र, दैनिक यज्ञ, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, विशेष यज्ञ और विशेष आहुतियाँ, अमावस्या, पूर्णिमा आदि के विशेष मन्त्र, ईश्वर प्रार्थना, पचास भजन संग्रह आदि के अतिरिक्त जन्मदिन, वर्षगांठ, सगाई, गोद भरना, वर तथा बारात का स्वागत, व्यापार का शुभारम्भ, भवन शिलान्यास, क्रिया सम्बन्धी (उठाला), यात्रा–गमन, शुद्धि संस्कार पद्धति, यजुर्वेद के 40वें अध्याय से युक्त सभी आर्यों के पर्वों के मन्त्र आर्य पर्व पद्धति भी सम्मिलित है। fo'k"k ckr ;g g fd lc eU= ekV vkj yky] lHkh eU= vFk lfgr vkj dfork ikB e Hkh vkj iR;d e= d vkjEHk e vk...e Hkh efnr gA 23x36 का बड़ा साईज, आकर्षक टाईटिल तथा पृष्ठ संख्या 176, संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण मूल्य एक प्रति 175 रुपये डाक व्यय अलग होगा।

बुक मंगाते समय यदि आप सीधे राशि भेजना चाहते हैं तो निम्न खाते में राशि भेजकर दूरभाष पर सूचित करें :–

e/kj idk'ku
खाता संख्या–0127002100058167
IFSC Code No.- PUNB0012700
पंजाब नेशनल बैंक, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

मधुर प्रकाशन
2804, गली आर्य समाज,
बाजार सीताराम, दिल्ली–110006
मो.:–9810431857

'शुभ मुहूर्त' शुभस्य शीघ्रम्, अशुभस्य कालहरणम्

– सीताराम गुप्ता

यदि हम ध्यानपूर्वक देखें तो पता चलता है कि आज आधुनिक कहा जाने वाला समाज पहले से भी अधिक अंधविश्वासी हो गया है। जिधर देखो ज्योतिषियों अथवा भविष्यवक्ताओं की दुकानें सजी हैं। बहुत कम ऐसे समाचार पत्र हैं जिनमें दैनिक, साप्ताहिक अथवा मासिक भाग्यफल प्रकाशित न होता हो। दैवी कृपा बेचने और खरीदने के कारोबार ने न केवल अशिक्षित लोगों को अपने जाल में बुरी तरह से फंसा रखा है अपितु शिक्षित समाज भी इससे मुक्त नहीं रह गया है। इनके कारण हमारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित ही नहीं हो पाता। गीता में निष्काम कर्म को महत्व दिया गया है। कर्म करो लेकिन फल की इच्छा मत करो। निष्काम कर्म का अर्थ ही है कि कार्य में सफलता आशातीत व असंदिग्ध होती है। लेकिन अधिकांश लोग कार्य में सफलता सुनिश्चित करने के लिए ये भी सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं कि कार्य को सही अथवा शुभ मुहूर्त में ही किया जाए क्योंकि उनके अनुसार शुभ मुहूर्त में किए गए कार्यों में ही अपेक्षित पूर्ण सफलता संभव है अन्यथा नहीं।

यात्रा पर जाना हो, प्रापर्टी खरीदनी हो, मकान बनवाना प्रारंभ करना हो, गृह प्रवेश करना हो अथवा विवाह आदि अन्य कोई भी मांगलिक कार्य हो लोग प्रायः शुभ मुहूर्त में ही यह कार्य संपन्न करते हैं। कुछ लोग इतने अधिक अंधविश्वासी हो गए हैं कि वो चाहते हैं कि उनके बच्चे का जन्म भी तथाकथित शुभ मुहूर्त में ही हो। इसके लिए पहले तो वो ज्योतिषी वगैरा से पैदा होने वाले अपने बच्चे के पैदा होने के संभावित समय के आसपास के शुभ मुहूर्त पूछते हैं। फिर डॉक्टर से कह कर उसी शुभ मुहूर्त में बच्चे की डिलीवरी करवाने का प्रयास करते हैं। क्या नादानी है। नादानी ही नहीं निर्दयता व प्रकृति के विरुद्ध कार्य है और किसी भी क्षेत्र में प्रकृति के विरुद्ध जाने के भयंकर परिणाम निकलते हैं। एक बात और है सोचने की और वो ये कि क्या तथाकथित शुभ मुहूर्त में कार्य अपने आप हो जाते हैं? क्या शुभ मुहूर्त में कार्य करके सफलता पाने के लिए पुरुषार्थ नहीं करना पड़ता? वास्तव में पुरुषार्थी व्यक्ति ही जीवन में अधिकाधिक सफलता प्राप्त करते हैं, शुभ मुहूर्त की प्रतीक्षा में बैठे रहने वाले या भाग्यवादी लोग नहीं।

किसी भी कार्य को करने के लिए शुभ मुहूर्त, शुभ घड़ी, शुभ दिन अथवा शुभ महीना कौन सा होगा इसका पूरा शास्त्र हम लोगों ने रच डाला है। लेकिन देखने में यह भी आता है कि एक समय विशेष पर शुभ मुहूर्त में जहां अनेकानेक मांगलिक कार्य संपन्न हो रहे होते हैं वही उन्हीं क्षणों में दूसरी ओर रोग, शोक, मृत्यु, दुर्घटनाएं, उत्पीड़न, शोषण आदि के दृश्य भी सर्वत्र दिखलाई पड़ते हैं। किसी का जन्म हो रहा है तो कोई काल के गाल में समा रहा है। कहीं मांगलिक ध्वनि सुनाई पड़ रही है तो कहीं हृदयविदारक रूदन कानों के पर्दों से टकरा रहा है। कहीं परीक्षा परिणाम घोषित हो रहा है जिसमें कोई पास तो कोई फेल हो रहा है। ऐसी स्थिति में हम प्रायः कह देते हैं कि यह अपने–अपने कर्मों का फल है। जैसा कर्म वैसा परिणाम। ठीक है। जैसा कर्म वैसा परिणाम लेकिन यदि हर व्यक्ति को अपने कर्मों का फल भोगना ही है, कर्म के अनुसार परिणाम मिलना ही है तो फिर महत्व कर्म का हुआ या मुहूर्त का?

शुभ मुहूर्त वास्तव में है क्या? शुभ मुहूर्त वास्तव में कार्य को प्रारंभ करने का उचित समय है। यह समय प्रबंधन का ही एक स्वरूप है ताकि कार्य समय पर संपन्न हो सके और निर्विघ्न रुप से संपन्न हो सके। हमारे संसाधन और प्रयास निरर्थक न हो जाएं। एक समय था जब हमारे पास उतने साधन नहीं थे जितने आज हैं। पहले सड़के नहीं थीं, यातायात के साधन नहीं थे। अतः लोग पैदल ही आते जाते थे। बरसात के दिनों में तो पैदल आना जाना भी दुष्कर हो जाता था। ऐसे में बरसात के दिनों में किसी भी कार्य को करने का निषेध था ताकि मौसम संबंधी परेशानियों व अव्यवस्थाओं से बचा जा सके। पहले बिजली नहीं थी अतः दिन की रोशनी में ही सारे कार्य करने होते थे। कहीं जाना होता तो सुबह जल्दी उठकर चल पड़ते थे ताकि पहुंचने और वापस आने में रात ना हो जाए। आज भी दोपहर से पूर्व या सूर्यास्त से पहले का समय शुभ माना जाता है और इसके मूल में है सामान्य बुद्धि और व्यवहारिकता।

अब जीवन के दूसरे महत्वपूर्ण पक्ष को भी देखिए। आपका किसी महत्वपूर्ण या मनचाहे कोर्स में प्रवेश हो जाता है अथवा नौकरी मिल जाती है तो आपको एक निर्दिष्ट समय पर ही जाना पड़ता है अन्यथा आपका प्रवेश या नौकरी रद्द कर दी जाती है। क्या ऐसी स्थितियों में भी आप शुभ मुहूर्त के चक्कर में पड़ेंगे? शायद नहीं। बिल्कुल भी नहीं। हम जानते हैं कि यदि यह अवसर हाथ से निकल गया तो दोबारा नहीं मिलने वाला। हम तत्क्षण अपेक्षित दिशा में आगे बढ़ने का निर्णय लेते हैं। प्रायः यही पढ़ाई अथवा नौकरी हमारे जीवन में सुख समृद्धि लाती है तथा हमारे जीवन को अर्थ व गुणवत्ता प्रदान करने में सहायक व सक्षम होती है। यहां अवसर महत्वपूर्ण हो जाता है ना कि कोई मुहूर्त विशेष।

वास्तव में उपयोगी अवसर की प्राप्ति या महत्वपूर्ण कार्य के प्रारंभ के कारण ही कोई समय विशेष या दिनविशेष हमारे लिए यादगार बन जाता है, शुभ हो जाता है शुभ मुहूर्त के कारण नहीं। यही कारण है कि हम अपना जन्मदिन, किसी महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम में प्रवेश का दिन, नौकरी शुरू करने का दिन व विवाह आदि का दिन कभी नहीं भूलते। उनकी वर्षगांठ मना कर उसे हमेशा याद रखने का प्रयास करते हैं। किसी भी वर्षगांठ या एनिवर्सरी को मनाने के लिए तो कभी भी शुभ मुहूर्त नहीं देखा जाता। जब हम इस संसार में आते हैं तो क्या शुभ मुहूर्त देख कर आते हैं? जब कोई व्यक्ति बीमार होता है या कोई आसन्नप्रसवा प्रसव पीड़ा के कारण छटपटा रही होती है तो क्या शुभ मुहूर्त देखकर ही उन्हें अस्पताल या लेबर रूम में ले जाया जाता है? नहीं न। तो फिर अन्य कार्यों के लिए शुभ मुहूर्त रूपी इस निरर्थक नाटक बाजी की क्या जरूरत है?

वास्तव में उपयोगी अवसर की प्राप्ति या महत्वपूर्ण कार्य के प्रारंभ के कारण ही कोई समय विशेष या दिनविशेष हमारे लिए यादगार बन जाता है, शुभ हो जाता है शुभ मुहूर्त के कारण नहीं। यही कारण है कि हम अपना जन्मदिन, किसी महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम में प्रवेश का दिन, नौकरी शुरू करने का दिन व विवाह आदि का दिन कभी नहीं भूलते। उनकी वर्षगांठ मना कर उसे हमेशा याद रखने का प्रयास करते हैं। किसी भी वर्षगांठ या एनिवर्सरी को मनाने के लिए तो कभी भी शुभ मुहूर्त नहीं देखा जाता। जब हम इस संसार में आते हैं तो क्या शुभ मुहूर्त देख कर आते हैं? जब कोई व्यक्ति बीमार होता है या कोई आसन्नप्रसवा प्रसव पीड़ा के कारण छटपटा रही होती है तो क्या शुभ मुहूर्त देखकर ही उन्हें अस्पताल या लेबर रूम में ले जाया जाता है? नहीं न। तो फिर अन्य कार्यों के लिए शुभ मुहूर्त रूपी इस निरर्थक नाटक बाजी की क्या जरूरत है?

यदि हम ध्यान पूर्वक देखें या चिंतन करें तो ज्ञान होता है कि मुहूर्त शुभ या अशुभ नहीं होता शुभ या अशुभ होता है कार्य। जिसका परिणाम शुभ वही कार्य शुभ और जिसका परिणाम भयंकर होने की प्रबल संभावना हो वही अशुभ है। हमारे लिए श्रेयस्कर यही होगा कि हमें पता चल जाए कि कौन से कार्य शुभ हैं कौन से अशुभ। संस्कृत में एक सूक्ति है कि 'शुभस्य शीघ्रम, अशुभस्य कालहरणम्' अर्थात शुभ कार्य को जितना जल्दी हो सके कर डालें लेकिन अशुभ कार्य को निरंतर टालते रहें। 'शुभस्य शीघ्रम' अर्थात शुभ अथवा पुण्य कार्य को शीघ्र करें। यदि हम उसको चूक गए तो हम किसी नेक काम अथवा पुण्य से वंचित अवश्य रह जाएंगे। किसी का धन्यवाद करना है तो क्या किसी मुहूर्त अथवा उचित अवसर की प्रतीक्षा करना उचित होगा? कदापि नहीं। किसी को पुरस्कृत करना है अथवा किसी का धन्यवाद करना है तो शीघ्रता करें।

साथ ही कहा गया है कि 'अशुभस्य कालहरणम्' अर्थात अशुभ अथवा पाप कर्म के लिए शीघ्रता न करें अपितु समय गुजर जाने दें। अशुभ कार्य को करने में कभी भी शीघ्रता मत कीजिए। उन्हें यथासंभव टाल दीजिए। संभव है कालांतर में कहीं से ऐसी सद्बुद्धि मिल जाए कि पाप कर्म से विरत हो जाएं, उससे बच जाएं। आज इस विश्व में इतने आणविक, परमाणविक व अन्य अस्त्र–शस्त्र उपलब्ध हैं जिनसे इस खूबसूरत दुनिया को इसके संपूर्ण जीव जगत सहित अनेकानेक बार पूर्णतः नष्ट ध्वस्त किया जा सकता है। लेकिन कुछ अच्छे और समझदार लोगों की 'अशुभस्य कालहरणम्' नीति व दृष्टि के कारण ही हम जीवित हैं। अशुभ कार्य को यथासंभव टाल दीजिए। क्या किसी भी शुभ कार्य को करने की तरह ही अशुभ कार्य को न करने का मुहूर्त भी निकाला जाता है? नहीं। संभव ही नहीं है। समझदारी और विवेक से काम लेने की जरूरत है। समझदारी और विवेक से कोई भी समय शुभ समय हो जाएगा जबकि इसके अभाव में किसी भी घड़ी को अशुभ होते देर नहीं लगती। यही समझदारी शुभ मुहूर्त है। सही मुहूर्त नहीं सही और उपयोगी कार्य का चुनाव कर उसे पूरा करना अपेक्षित है अन्य कुछ भी नहीं।

कई बार हम किसी अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य में लगे होते हैं और किसी भी कीमत पर उसे पूरा किए बिना नहीं छोड़ना चाहते लेकिन इसी दौरान विषम परिस्थितियां उत्पन्न होकर हमारे काम को बाधित कर देती हैं। मान लीजिए किसी शुभ मुहूर्त में आप कोई अनुष्ठान का आयोजन करवा रहे हैं और उसे उसी शुभ मुहूर्त में ही पूरा होना चाहिए। ऐसे समय पर यदि दुर्भाग्य से आपका बच्चा सीढ़ियों से गिर जाता है और उसे गंभीर चोट लग जाती है तो क्या इस स्थिति में आप शुभ मुहूर्त में हो रहे कार्य को पहले पूरा होने देंगे या बच्चे को डॉक्टर के पास या अस्पताल लेकर जाएंगे। यदि हम महत्वपूर्ण कार्य की बजाय अर्जेंट कार्य पहले और फौरन नहीं करेंगे तो शुभ मुहूर्त को अशुभ में बदलते देर नहीं लगेगी। यदि बाढ़, भूकंप अथवा दुर्घटना जैसी कोई प्राकृतिक आपदा आती है तो सरकार ही नहीं लोग भी शुभ मुहूर्त देखने की बजाय फौरन बचाव और राहत कार्यों में जुट जाते हैं।

जब हमारे पास अवसर होते हैं, योजनाएं होती हैं तभी उनके क्रियान्वयन के उचित समय का शुभ मुहूर्त तलाशते हैं न कि शुभ मुहूर्त में बैठकर अवसर की प्रतीक्षा करते हैं। शुभ मुहूर्त के कारण जीवन में कभी भी महत्वपूर्ण कार्य करने के अवसर नहीं मिलते। हमारा विवेक, हमारी सही समय पर सही निर्णय लेने की क्षमता, हमारा सामान्य ज्ञान व हमारी व्यावहारिक बुद्धि आदि ऐसे तत्व हैं जो किसी भी क्षण को शुभ अर्थात उपयोगी बनाने में सक्षम है। शुभ मुहूर्त की तलाश छोड़कर शुभ उपयोगी व सकारात्मक कार्यों के चयन व उपलब्ध उपयोगी अवसरों के क्रियान्वयन में हम जितनी शीघ्रता कर सके उतना ही हमारे लिए श्रेयस्कर होगा। शुभ मुहूर्त के चक्कर में हम कई बार कोई बड़ा कार्य करने से चूक जाते हैं और बहुत बड़ा नुकसान कर बैठते हैं। समझदारी से हर उपलब्ध क्षड़ को अधिकाधिक आनंददायक उपयोगी और लाभप्रद बनाया जा सकता है।

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य भजनोपदेशक परिषद् का साधारण अधिवेशन एवं पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ का

पुनः शुभारम्भ समारोह भव्यता के साथ सम्पन्न

तीनों दिन यज्ञ के ब्रह्मा पद को डॉ. सीमा जी ने सुशोभित किया तथा कन्या गुरुकुल की नवनियुक्त आचार्या नर्वदा जी ने अपनी ब्रह्मचारिणियों के साथ सस्वर वेद पाठ किया। आर्य भजनोपदेशक परिषद् द्वारा इस अवसर पर वयोवृद्ध उपदेशकों को शॉल, श्रीफल एवं नकद राशि देकर सम्मानित किया गया। इन उपदेशकों को सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने कर–कमलों से शॉल एवं श्रीफल भेंट किया तथा भजनोपदेशक परिषद् के प्रधान श्री सहदेव बेधड़क, महामंत्री डॉ. कैलाश कर्मठ व कोषाध्यक्ष श्री नरेशदत्त आर्य ने धनराशि भेंट की। सम्मानित होने वाले भजनोपदेशकों में श्री राकेश आर्य चांदपुर बिजनौर, श्री हरि सिंह आर्य तिनकी रूड़ी, अलवर, श्री करतार सिंह हरिद्वार, श्री रामावतार अलीगढ़ के नाम उल्लेखनीय हैं।

पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल के शुभारम्भ की अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने की तथा मुख्य उद्बोधन सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का रहा। स्वामी आर्यवेश जी ने अपने सम्बोधन में आर्य भजनोपदेशकों तथा गुरुकुलों को आर्य समाज की रीढ़ बताते हुए आर्य जनता का आह्वान किया कि वे जहाँ गुरुकुलों को सहयोग करके शक्ति सम्पन्न बनायें वहीं आर्य भजनोपदेशकों तथा प्रचारकों को भी न केवल सम्मानित करें बल्कि आर्थिक रूप से भी उनका सहयोग करें। कोरोनाकाल में सभी कार्यक्रम बन्द हो जाने से उपदेशक वर्ग कार्यक्रम न आने के कारण आर्थिक संकट में चल रहे हैं और उन्हें अपने परिवारों को संभालने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। अतः यह आवश्यक है कि अब सभी आर्य समाजें अपने उत्सव तथा अन्य कार्यक्रम प्रारम्भ करें तथा अपने उपदेशकों को सम्मानित करें। इसी प्रकार गुरुकुल का भी आर्थिक ढांचा लड़खड़ाया हुआ है इसके लिए विशेष आर्थिक सहयोग आर्यजनों को करना चाहिए। आर्य समाज के प्रचार–प्रचार में जहां आर्य समाज के भजनोपदेशकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है वहीं गुरुकुलों के माध्यम से विद्वान तैयार किये जाते हैं।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने आर्ष शिक्षा प्रणाली को अत्यन्त आवश्यक बताते हुए कहा कि हमें प्रत्येक गुरुकुल में एक आर्ष शिक्षा प्रणाली का विभाग चलाना चाहिए जिसके माध्यम से अच्छे विद्वान् तैयार किये जा सकें।

सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने इस अवसर पर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को मनुष्य के समग्र विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक बताया और कहा कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से बच्चे का सर्वतोमुखी विकास हो सकता है। सभामंत्री श्री प्रकाश आर्य ने विद्वान तैयार करने पर बल दिया और कहा कि भविष्य में आर्य समाज को शास्त्रार्थ महारथी तैयार करने पड़ेंगे। श्री विनय आर्य ने गुरुकुलों के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए, गुरुकुलों की आर्थिक स्थिति सुधारने पर बल दिया। श्री बिरजानन्द जी ने गुरु–शिष्य परम्परा को पुनः स्थापित करने के लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली अपनाने की आवश्यकता बताई। श्री सहदेव बेधड़क ने नये भजनोपदेशक बनाने तथा श्री कैलाश कर्मठ ने भजनोपदेशक निधि स्थापित करने की घोषणा की।

इस अवसर पर कार्यक्रम के संयोजक डॉ. सोमदेव शास्त्री ने सभी आर्य संन्यासियों, आर्य नेताओं व आर्य भजनोपदेशकों का समारोह में पधारने पर अभिनन्दन किया तथा प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि कई वर्ष से बन्द पड़े पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ को पुनः प्रारम्भ करने का मेरा निश्चय आज फलीभूत हो रहा है और 13 कन्याओं ने गुरुकुल में प्रवेश लिया है। निकट भविष्य में और कन्याएं भी गुरुकुल में दाखिल की जायेंगी और इसकी सम्पूर्ण व्यवस्था आर्यजनों के सहयोग से समुचित रूप से की जायेगी। उन्होंने अपने विशिष्ट सहयोगी श्री जीववर्धन शास्त्री, डॉ. सीमा आचार्या, गुरुकुल ट्रस्ट के सदस्य श्री देवेन्द्र शेखावत, श्री रूप सिंह सक्तावत, मास्टर गजराज, मास्टर यशपाल सिंह,

अगले पृष्ठ पर जारी

चौधरी राम सिंह लोहचब स्टेडियम, ग्राम–चौधरीवास, जिला–हिसार का दिनांक 1 जनवरी, 2021 को

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के कर–कमलों द्वारा हुआ भव्य लोकार्पण

हरियाणा प्रान्त के जिला–हिसार में स्थित ग्राम–चौधरीवास में 5 एकड़ भूखण्ड पर लगभग 1.25 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित किये गये स्टेडियम का लोकार्पण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के कर–कमलों द्वारा 1 जनवरी, 2021 को एक भव्य समारोह के द्वारा किया गया। इस स्टेडियम का निर्माण प्रसिद्ध दानवीर समाजसेवी चौधरी रामसिंह लोहचब ने अपने पवित्र दान से करवाकर गाँव को समर्पित कर दिया। स्टेडियम के भव्य भवन, मुख्य द्वार पूरे भूखण्ड की चार–दिवारी के निर्माण पर यह धनराशि व्यय की गई। इस अवसर पर प्रसिद्ध विदुषी आर्य भजनोपदेशिका कल्याणी आर्या ने यज्ञ सम्पन्न कराया और अपने मधुर भजनों का कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया।

स्टेडियम लोकार्पण के पश्चात् विशाल जन–समूह को सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने दान तथा परोपकार की महिमा पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने चौधरी राम सिंह की प्रशस्ति करते हुए उन्हें दानवीर भामाशाह की उपाधि से सम्मानित किया और कहा कि जो व्यक्ति अपनी पवित्र कमाई को जन–कल्याण के लिए दान करता है वह समाज में सदैव प्रशंसनीय एवं प्रेरणास्रोत के रूप में सम्मानित होता है। स्वामी जी ने इस स्टेडियम निर्माण को महायज्ञ की संज्ञा दी और बताया कि स्टेडियम में समाज के सभी वर्गों के बच्चे तथा नवयुवक लाभान्वित होंगे। खेलकूद एवं कसरत के द्वारा उनका स्वास्थ्य उत्तम होगा, उनके विचार अनुशासित एवं पवित्र होंगे और ऐसे अनुशासित चरित्रवान एवं पवित्र विचारों से ओत–प्रोत युवाओं से समाज उन्नत होगा। अतः जिस कार्य से सबका भला होता है या कल्याण होता है वह कार्य यज्ञ कहलाता है। उन्होंने देवयज्ञ की उपमा परोपकार से करते हुए बताया कि जैसे देवयज्ञ के द्वारा पूरा वायुमण्डल शुद्ध एवं प्रदूषणरहित हो

जाता है और सब प्राणियों को उसका लाभ प्राप्त होता है उसी प्रकार संसार के सभी परोपकारार्थ किये जाने वाले कार्य यज्ञ की श्रेणी में आते हैं और उन कार्यों को सम्पन्न करने वाले यजमान सदैव आगे बढ़ते हैं। उनका सदैव सम्मान होता है और उनकी प्रशंसा होती है। आज चौधरी राम सिंह जी ने अपने इस गाँव में इस विशाल स्टेडियम का निर्माण कराकर निःसंदेह एक विशाल यज्ञ सम्पन्न किया है। उपस्थित सैकड़ों प्रतिष्ठित लोगों द्वारा स्वामी जी ने चौधरी राम सिंह जी को शुभकामना एवं आशीर्वाद देने के लिए उनके ऊपर पुष्प वर्षा कराई।

इस पूरे कार्यक्रम का संयोजन आर्य युवक परिषद् हिसार के कर्मठ प्रधान श्री दलबीर सिंह आर्य ने किया। उनके साथ श्री जयवीर आर्य सोनी मुकलान, श्री महेन्द्र सिंह आर्य आर्यनगर, श्री कृष्ण कुमार रावलवास खुर्द, सेठ बजरंग लाल आर्य, डॉ. अनूप सिंह मुकलान आदि का विशेष सहयोग रहा।

इस अवसर पर क्षेत्र के प्रतिष्ठित नेता चौधरी रणधीर सिंह पनिहार, चौ. नन्दराम सांगवान, श्री महावीर सिंह सेवानिवृत्त तहसीलदार, श्री जगदीश आर्य व श्री शोभाचन्द्र आर्य धीरणवास, श्री सुभाष गोदारा एडवोकेट हाई कोर्ट, श्री धर्मपाल गोदारा सेवानिवृत्त चीफ इंजीनियर सिंचाई विभाग, श्री खजान सिंह पनिहार, श्री बलवन्त सिंह आर्य व श्री जयवीर आर्य न्याणां, श्री वेद प्रकाश सोनी मुकलान आदि महानुभाव भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के समापन पर श्री राम सिंह जी ने स्वामी आर्यवेश जी का स्मृति चिन्ह भेंटकर स्वागत किया तथा धन्यवाद ज्ञापित किया। श्री रामसिंह जी के सुयोग्य सुपुत्र वरुण लोहचब भी पेरिस (फ्रांस) से इस समारोह में विशेष रूप से अपने पिता जी द्वारा निर्मित स्टेडियम के लोकापर्ण के अवसर पर पधारे तथा स्वामी जी का उन्होंने भी विशेष आभार व्यक्त किया।

पृष्ठ 4 का शेष

आर्य भजनोपदेशक परिषद् का साधारण अधिवेशन एवं पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ का

पुनः शुभारम्भ समारोह भव्यता के साथ सम्पन्न

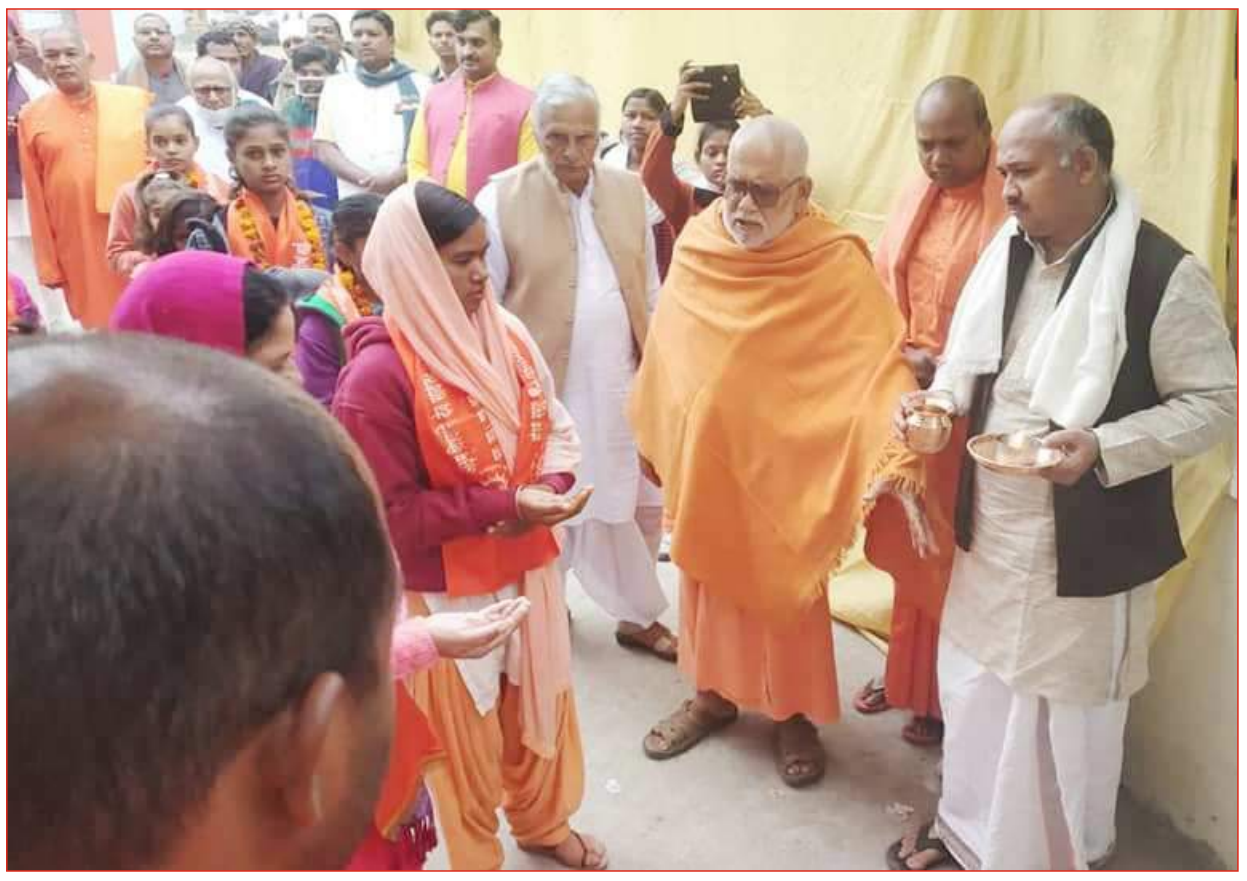

श्री कन्हैयालाल शर्मा, श्री राजगोपाल आर्य मंत्री आर्य समाज बीकानेर, श्री कुंजीलाल पाटीदार प्रधान आर्य समाज निनौरा, श्री दशरथ पाटीदार प्रधान आर्य युवक परिषद् निनौरा, श्री हरदेव सिंह आर्य व अन्य शिवगंज, श्री धर्मेन्द्र आर्य कुशलगढ़, श्री गुलाब सिंह आर्य थांदला व आचार्य दयासागर जो गुरुकुल में प्रवेश दिलाने के लिए बच्चियों को भी लेकर आये आदि की विशेष प्रशस्ति की। आचार्य सोमदेव जी ने कहा कि आर्य समाज निम्बाहेड़ा का इस पूरे कार्यक्रम में विशेष सहयोग रहा और इसका श्रेय उत्साही नवयुवक श्री विक्रम आंजना को है। उन्होंने आचार्य चन्द्रदेव व श्री मनुदेव खेड़ा के सहयोग के लिए भी उन्हें सम्मानित किया।

श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ के आचार्य श्री चन्द्रदेव जी उनके सहपाठी श्री मनुदेव जी का विशेष सहयोग के लिए अभिनन्दन किया। उन्होंने वैदिक मिशन मुम्बई के पदाधिकारियों का भी धन्यवाद ज्ञापित किया और आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी इस गुरुकुल के संचालन में उनका सहयोग बना रहेगा। डॉ. सोमदेव शास्त्री की अपील पर लाखों रुपये के सहयोग की घोषणाएँ भी दानदाताओं ने की।

यज्ञ, योग और आयुर्वेद से ही विश्व में शांति तथा समरसता स्थापित हो सकती है – स्वामी आर्यवेश

अंतर्राष्ट्रीय लब्ध प्रतिष्ठ वैदिक विद्वान् आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री का जन्मोत्सव हर्षोल्लास से संपन्न

पूज्य स्वामी आर्यवेश जी को 'अध्यात्म मार्तण्ड' सम्मान से किया गया विभूषित

ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य जी को 'विशिष्ट मानव रत्न' सम्मान से किया गया सम्मानित

वैदिक संस्कृति के तीन मुख्य स्तम्भ 'यज्ञ, योग और आयुर्वेद' आज की इस विषम कोरोना परिस्थितियों में सम्पूर्ण मानव जाति के लिए वरदान सिद्ध हो रहे है, जिसके माध्यम से सम्पूर्ण विश्व लाभ ले रहा है।

सात्विक विचार, सात्विक दिनचर्या और सात्विक आहार से आज भारतवर्ष ने कोरोना पर तो विजय प्राप्त की ही है इसके अतिरिक्त हमारे ऋषि मुनियों द्वारा स्थापित की गई परंपराओं को पूरे विश्व ने सराहा, स्वीकारा और आत्मसात किया है।

यह विचार स्वामी आर्यवेश जी ने अध्यात्म पथ (पंजी.) मासिक पत्रिका के तत्वावधान में आयोजित विशाल वैदिक सत्संग, भजन संध्या एवं सम्मान समारोह में व्यक्त किये।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी अध्यात्म पथ पत्रिका के यशस्वी संपादक अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त लब्धप्रतिष्ठ वैदिक विद्वान् आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी के जन्मदिवस के शुभअवसर पर आयोजित इस भव्य समारोह की अध्यक्षता कर रहे थे।

स्वामी आर्यवेश जी ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि आज विश्व पर्यावरण को संरक्षित करना अत्यंत आवश्यक हो गया है। वैदिक संस्कृति का प्रथम मुख्य स्तम्भ यज्ञ है जिसके माध्यम से भौतिक जगत ही नहीं वरन आध्यात्मिक शुद्धि का मार्ग भी प्रशस्त होता है।

द्वितीय योग से आज समस्त विश्व स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहा है, तृतीय आयुर्वेद है जिसके अनुसार जीवन शैली को अपनाकर वर्तमान समय में फैली महामारी कोरोना पर लोग विजय प्राप्त कर रहे है।

आर्यों के द्वारा सुरक्षित रखी गयी वैदिक संस्कृति की इन धरोहरों के माध्यम से ही आज सारा विश्व शांति की कामना कर सकता है। आज वैदिक संस्कृति को घर घर में प्रचारित प्रसारित करने की अत्यंत आवश्यकता है। आर्यों को संगठित होकर आज विश्व का मार्गदर्शन करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी का उद्देश्य सम्पूर्ण विश्व को आर्य अर्थात श्रेष्ठ बनाना था, उन्होंने शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक रूप से उन्नति को ही वास्तविक सुख, समृद्धि और उन्नति का आधार बताया था।

विश्व में व्याप्त अशांति का मुख्य कारण वर्तमान में प्रचलित विभिन्न मत मतान्तर ही है। सत्य वेद के ज्ञान से ही चहुओर फैले इस अज्ञान, अविद्या, अन्धकार को समाप्त किया जा सकता है।

स्वामी जी ने विश्व द्वारा विध्वंसक अस्त्रों को बनाने की होड़ की चर्चा करते हुए कहा कि विभिन्न देशों के द्वारा तैयार परमाणु बम्बों के ऊपर बैठा ये विश्व समुदाय वर्ष 1945 ई. की भांति हिरोशिमा और नागाशाकी जैसे दुखद हादसों के लिए तैयार है, ऐसे समय में विश्वभर में शांति, मित्रता, प्रेम और सद्‌भाव के लिए वेदों के ज्ञान का जन जन में प्रचार प्रसार होना आज के समय की महती आवश्यकता है।

आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री द्वारा विश्व शांति के इस महान एवं पुनीत कार्य में योगदान का उल्लेख करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने कहा की अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान शास्त्री जी ने अनेकों देशों की यात्रायें की है और अपने पुरुषार्थ, कर्मठता एवं आर्ष ज्ञान से वेदों की शिक्षाओं का सघन प्रचार किया है।

आपका स्वभाव, विनम्रता और निरभिमानता अद्वितीय है। प्रेम, सहृदयता से आप सभी का दिल जीत लेते है।

मृदुभाषी, सरल, सरस वक्तव्य से एवं अपने श्लोकों दोहों और कविताओं से आप अपनी बात श्रोताओं के दिलों में ऐसे स्थापित करते है कि सदा के लिए उनके दिलों में बस जाती है। ऐसे विद्वान् आर्य जगत के उत्तम मणि है उनके उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायुष्य की मंगल कामना स्वामी आर्यवेश जी ने व्यक्त की।

1 जनवरी, शुक्रवार, सायं 4.00 बजे से ऑनलाइन जूम एप के माध्यम से आयोजित किये गए इस विशाल वैदिक महासत्संग, भजन संध्या एवं सम्मान समारोह का सुंदर भव्य आयोजन हुआ जिसमें आर्य जगत के मूर्धन्य सन्यासी स्वामी डॉ. आर्येशानंद सरस्वती संस्थापक, मनन आश्रम पिंडवाड़ा का विशेष सानिध्य प्राप्त हुआ।

ब्रह्मचारियों द्वारा मंत्र पाठ से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इस दिन पाश्चात्य नववर्ष होने से सम्पूर्ण भारत ही नहीं वरन देश विदेशों से भी दर्जनों गणमान्य एवं प्रतिष्ठित व्यक्तित्व शामिल हुए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री हरिदेव रामधनी जी प्रधान, आर्य सभा मॉरीशस रहे। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी के प्रपौत्र श्री विश्राम वाचस्पति (पूर्व फीचर संपादक दैनिक हिंदुस्तान) सारस्वत अतिथि रहे।

विशिष्ट आतिथियों की श्रृंखला में श्री ओम सपरा, श्री अवनीश मैत्रिः, श्री रविदेव गुप्त, श्री जितेन्द्र तायल, श्री दीक्षेंद्र आर्य आदि गणमान्य जन भारत से एवं श्रीमती सरोजिनी जौहर जी (कनाडा), श्रीमती प्रेम हंस जी (ऑस्ट्रेलिया), श्री रमेश जैन जी (जर्मनी) , श्री विट्ठल माहेश्वरी जी (इटली), श्री विनोद पोद्दार जी (नेपाल) , श्री गिरीश आहूजा जी (अमेरिका), श्री पुनीत सुनेजा जी (कुवैत) आदि विभिन्न देशों के प्रतिष्ठित गणमान्य आर्यों ने इस महा वैदिक सत्संग की शोभा को बढ़ाया।

सभी ने चंद्रशेखर शास्त्री के जन्मदिवस पर भूरिशः हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित की।

श्री नरेन्द्र आर्य सुमन, श्री विजयभूषण आर्य, श्रीमती कविता आर्या एवं श्री नरेश वर्मा धुरंधर आदि ने अपने सुमधुर कंठ से भजनों की लड़ी लगाई जिससें उपस्थित श्रोताओं ने हृदय में आनंद और उल्लास अनुभव किया।

संगीतमय और भक्ति रस की बहती धारा में आयुर्वेदाचार्य डॉ. सुषमा आर्या दिल्ली के द्वारा ओजस्वी वाणी से आयुर्वेद के चुनिन्दा सूत्रों से स्वाथ्य चर्चा की। इस विशिष्ट अवसर पर चंद्रशेखर शास्त्री जी द्वारा लिखी पुस्तक का उड़िया भाषा संस्करण का विमोचन किया गया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी को अध्यात्म मार्तण्ड सम्मान एवं उनके सहयोगी ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य जी को विशिष्ट मानव रत्न सम्मान से विभूषित किया गया।

कार्यक्रम में उपस्थित उपरोक्त गणमान्य व्यक्तियों ने आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री के जन्मदिवस की बधाई के साथ उनके द्वारा सामाजिक एवं आध्यात्मिक योगदान की संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित चर्चा की।

ज्ञातव्य रहे की अध्यात्म पथ (पंजी.) मासिक पत्रिका के तत्वावधान में आचार्य चंद्रशेखर जी कोरोना काल के दौरान ऑनलाइन गूगल मीट के माध्यम से पूरे विश्व में वेदों का डंका बजाते हुए 115 से भी अधिक सफल वैबिनारों का आयोजन एवं संचालन कर चुके है।

इन्ही कार्यक्रमों के तहत पूर्व में आयोजित हुई सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा का परिणाम भी घोषित किया एवं विजेताओं को पारितोषिक प्रदान किया गया।

मात्र 2 घंटे के इस संक्षिप्त किन्तु भव्य दिव्य कार्यक्रम में देश–विदेश से जुड़े सभी श्रोताओं के साथ साथ उपस्थित रहे सभी आर्यजनों, सहयोगी जनों एवं अध्यात्म पथ पत्रिका के परिवार जनों ने अनन्य आनंदरस का पान किया और डिजिटल माध्यम जूम से जुड़कर आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी को यशस्वी तथा दीर्घ जीवन की शुभकामनाएं प्रदान की। आर्यों के उत्साह प्रसन्नता को देखते हुए कार्यक्रम 3 घंटे तक चला।

ब्रह्मचारी सक्षम ने अष्टाध्याई के सूत्रों ,गीता के श्लोकों का उच्चारण और संस्कृत में स्वागत गीत प्रस्तुत किया। आचार्य चंद्रशेखर जी ने अपने जन्मदिवस के अवसर पर ब्रह्मचारी सक्षम को 2100 रुपए की राशि से भी सम्मानित किया जैसा कि वह प्रति वर्ष करते हैं।

प्रिं अरुण आर्य ,यशपाल आर्य ,अशोक सुनेजा ,अश्विनी नांगिया ,सुरिन्द्र चौधरी,सूर्यकांत मिश्रा ,डॉ. पूनम सुनेजा , पूनम नांगिया आदि की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाया।

कार्यक्रम का सीधा प्रसारण फेसबुक आदि अन्य डिजिटल माध्यमों से भी किया गया। कार्यक्रम के अंत में इस आयोजन से जुड़े सभी आयोजकों, संयोजकों, उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों एवं आर्य श्रोताओं का हार्दिक आभार वैदिक संस्कृति प्रचार संघ, उदयपुर के सह–संयोजक श्री अवनीश मैत्रिः ने किया।

– अवनीश मैत्रि

शतपथ ब्राह्मण में अग्निहोत्र का विवेचन

– स्मृतिशेष डॉ. भवानीलाल भारतीय

यज्ञ की भावना का मूल वेदों में देखा जा सकता है। यजुर्वेद के अनुसार यज्ञ रूपी परमात्मा का यजन–पूजन यज्ञ के द्वारा किया जाता है। भौतिक अग्निहोत्र की विधि का निर्माण भी वेद मंत्रों को यथा स्थान, यथा क्रिया में विनियुक्तकर ही किया गया। अग्न्याधान के मंत्र ऋषि दयानंद ने यजुर्वेद के तृतीय अध्याय स्मृति शेष से लिए हैं। तथापि यज्ञ नैतिक मूल्यों का बाल्य प्रतीक ही है। सत्य और श्रद्धा वे मौलिक तत्व हैं जो यज्ञ के विधान में निहित हैं। इस आशय की एक आख्यायिका शतपथ ब्राह्मण में आती है। ध्यान रहे कि ब्राह्मण तथा उपनिषदों में आए उपास्थान (आख्यायिकाएं) ऐतिहासिक भी हैं तो कुछ रूपकात्मक तथा प्रतीकात्मक है। विदेह जनक से जुड़े आख्यानों को ऐतिहासिक माना जाता है। अधिकांश में यह राजा तथा ऋषियों के संवाद रूप में है।

एक ऐसे ही आख्यान का आरंभ जनकवैदेह विदेह देश का राजा तथा ऋषि याज्ञवल्क्य के संवाद रूप में शतपथ (11/3/1/2/4) में आया है। यह संवाद मूल तथा अर्थ सहित यहां दिया जा रहा है :–

तद्वैतज्वनको वैदेहो याज्ञवल्क्यं पप्रच्छ।
वेत्थाग्निहोत्रं याज्ञवल्क्य इति।

हे याज्ञवल्क्य, क्या तुम अग्निहोत्र को जानते हो। याज्ञवल्क्य का उत्तर था – वेद सम्राडिति – हे सम्राट मैं जानता हूँ। जनक किमिति – वह अग्निहोत्र क्या है। किस पदार्थ से किया जता है? उत्तर – पयएवेति।

अर्थात् एक शब्द में कहें तो पय (दुग्ध) तथा उससे निकला घृत ही अग्निहोत्र का मुख्य साधन है।

जनक का प्रतिप्रश्न – यत् पयो न स्यात् केन जुहुया इति।

यदि दुग्ध (या घृत) न मिले तो कैसे अग्निहोत्र करें?

उत्तर में ऋषि ने कहा – व्रीहियवाभ्याम्मिति।

उस स्थिति में चावल और जौ से यज्ञ करना चाहिए।

इस पर राजा ने फिर पूछा – यद् व्रीहियवौ न स्यातां केन जुहुया इति।

मान लें कि चावल और जौ नहीं है तो यज्ञ कैसे करें?

उत्तर में ऋषि ने कहा – या अन्या ओषधय इति।

जो अन्य औषधियां मिले, उनसे अग्निहोत्र करें।

पुनः जनक का प्रश्न यदन्या ओषधयो न स्युः केन जुहुया इति।

ऐसी अन्य औषधियां भी सुलभ न हों तो हवन कैसे करें?

ऋषि ने कहा – या आरण्या ओषधय इति।

जंगल में मिलने वाली औषधियों से यज्ञ करें।

जनक ने पुनः पूछा – यदारण्या ओषधयो न स्युः केन जुहुया इति।

यदि ये जंगली औषधियां भी न मिलें तो यज्ञ किससे करें?

उत्तर में ऋषि का कथन था – वानस्पत्येन।

उस स्थिति में बट, पीपल, शमी आदि वृक्षों की समिधाओं के द्वारा यज्ञ करें। जंगल में ये प्रुचर मात्रा में उपलब्ध है।

जनक का अगला प्रश्न था – यद्वानस्पत्यं न स्यात् केन जुहुया इति।

मान लो कि किसी देश (यथा मरुस्थल) में वृक्षों के न होने से समिधाएं भी उपलब्ध न हों तो यज्ञ कैसे होगा?

प्रत्युत्पनमति ऋषि का उत्तर था – अद्भिरिति।

इस स्थिति में जल से यज्ञ करो। अर्थात् मंत्रोच्चारण पूर्वक पात्र से जल लेकर उसे अन्य पात्र में मंत्रोच्चारण पूर्वक छोड़ें। जनक की प्रश्नावली खत्म होने वाली नहीं थी। उसने कहा यद् उदकानि न स्युः केन जुहुया इति।

मान लो किसी देश में जल भी न मिले तो किससे यज्ञ करें? ऋषि का उत्तर था – 'न वा इह तर्हि किं च नासीत अथैनदह्यतैव सत्यं श्रद्धायामिति' यदि कुछ भी नहीं उपलब्ध हो तो श्रद्धा की अग्नि प्रज्ज्वलित कर उसमें सत्य की आहुति देवें। अर्थात् यज्ञ का मूल भाव ह्रदय में श्रद्धा को उदीप्त करना तथा सत्य को धारण करना है। यदि याज्ञिक के मन में आचरण में सत्य और श्रद्धा (सत्य के प्रतिनिष्ठा) का भाव विद्यमान है तो यह समझ लेना चाहिए कि वह सच्चा याज्ञिक है। तथापि इसका आशय यह भी नहीं है कि अग्निहोत्र के लिए आवश्यक वस्तुएं उपलब्ध होने पर भी हम इस नित्य कृत्य को न करें। अपवाद रूप में ही हमें घृत के अभाव में औषधियां, तदाभाव में जंगली, वनस्पतियां, समिधाएं आदि से यज्ञ करना चाहिए। यज्ञ का न करना कथमपि उचित नहीं है। यज्ञ जिस 'यज्' धातु से निष्पन्न होता है उसमें देवूपजा, संगतिकरण तथा दान का भाव निहित है। विद्वानों का सत्कार, भौतिक देवों (जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी, आकाश) का यथायोग्य उपयोग एवं उनमें संगति स्थापन तथा अभावग्रस्तों को अन्न, धनादि तथा जिज्ञासु को विद्या दान करना यज्ञ भावना है। यही कारण है कि शतपथ ब्राह्मण ने यज्ञ को विष्णु स्वरूप कहा। यज्ञो वै विष्णुः (सर्वव्यापक) तथा उसे श्रेष्ठतम कर्म बताया यज्ञो वै श्रेष्ठतम् कर्म।

– 315, शंकर कालोनी, श्री ंगगानगर

DAILY PRAYER

bY
Mahatma Narayan Swami

Ethical Value of Prayer

Man is considered to be the highest and loftiest creation in the scale of evolution.

He is born to perform duties in distinguishing him from animals at every step. These duties are three-fold.

1. Man's duties towards himself.
2. Man's duties towards others.
3. Man's duties towards God.

All These duties are epitomised in the "Daily Prayer" called the Brahma Yajna or Sandhya, which he is enjoined to perform twice daily, in the morning and evening, to give expression to his innermost feelings, hankerings and longings Prayer is, as a matter of fact, a universal instinct. It appears as if it has been wrought into human nature. Man prays because he cannot help praying. He derives out of prayer a certain satisfaction which he can derive from no other human activity.

The greatest value of prayer lies in its educational and moral effect, in the spiritual discipline which is must to those who pray. Prayer is a blessing in itself. It is undoubtedly a means of devloping human beings in the highest and truest sense. perhaps, there is no means to moral culture superior to the belief in and exercise of prayer. One who prays earnestly does immediately feel within himself or herself the quickening and refining influence of prayer.

The Object to Prayer

The object of prayer is happiness. Man always hankers after happiness. But happiness is not the result of idle hankering it is an achievement through strenuous living of the life of a good citizen. Man strives for happiness. He makes it the goal of his ambition and activities. It is his Summum bonum. To this end he prays. The first hymn given below is a prayer to that end.

Prayerful Mood

prayerful mood is the result of the inner recognition of the limits of our own powers. Man is baffled by the buffets of this world. His difficulties drive him to despair. There are so many contradictions in his life that he in his individual capacity, finds himself unable to solve them. Downcast and depressed he turns round and tries. He knocks at the door of a Greater Self—the Supreme Being—the Almighty God Whom his faith prescribes to be shelter and refuge for all rejected and dejected human beings. This attitude induces a prayerful mood.

When you are going to sit down for prayer, see that you draw yourself, that spiritual pranayama, Consecrate yourself be filled with the presence of God. Yield yourself to Him not with a passive acquiesence, a sentimental quietism but with an earnest, energetic direction of all your faculties to achieve something supreme through your contact with the all-embracing Spirtual Presence. When you bring yourself in this mood, you acquire the right, the privilege and the incentive to prayer offered in this mood will be effective, fruitful and regenerative.

ACHMAN MANTRA

Prayer for Peace and Happiness

(Place some water in the right palm and after reciting the following mantra do achman (sip it). Do this three times).

1. Om shanno devi rabhishtaya apobhavantu pitaye Shanyo rabhisravantu nah.

May the supreme Being —the giver of light, the All-Pervading Lord, blissful to us in the attainment of our desired end, i.e. happiness! May He shower on us His Peace and Happiness !

In this hymn we have our goal before us. We picture before or mind's eye the object we pray for—the end that we strive to attain. But we know, Happiness does not come to us through idle wishing, through passive brooding or inactive longing. It is to be achieved through struggle, active striving and strenuous living. For that we need performance of certain duties-duties to ourselves and duties to other.

Man's Duties Towards Himself

Our duty to ourselves consists of the great preparation for the supreme goal.

Our 'self' of body, mind and spirit. It is spirit that functions through the body and mind. All our success in life depends upon this right and correct functioning which requires regular discipline both of body and mind. Body, as a matter of fact, is seat of mind and its health contributes to the health of mind itself. Body consists of sense organs and its health and efficiency means the health and efficiency of these sense-organs individually as we recite the following hymn, touching them, and think over how best we can utilise them in our personal service and in the service of our fellowmen around us.

Anga sparsha mantra

Prayer for Wellbeing and Strength

(Take some water in the left palm. Dip the two middle fingers of the right hand into the water and touch the respective organs as the following mantras are recited.

2. Om Vak vak (both sides of the mouth)
Om Pranah Pranah (both nostrills)
Om Chakshuh Chakshuh (both eyes)
Om Shrotram Shrotram (both ears)
Om Nabhih (naval cord)
Om hridayam (heart)
Om Kanthah (throat)
Om Shirah (head)
Om Bahubhyam Yashobalam (both Shoulders)
Om Karatalakara Prishthe (both plams, front and back)

Blessed be Thy name O Lord! May thou strengthen and bless my organs of speech, my respiratory system, my organs of sight and hearing, my centres of love, feeling and heart, my throat and brain, my arms and hands, both for personal end and for the good of my fellowmen amidst whom I live !

It is to be distincitly understood that happiness results from the proper use of the sense-organs. Their strength is therefore, the first condition of happiness. God is invoked in the above hymn to come to our aid and bless our organs. We have to mentally, go over each organ, think of its use and misuse with a view to adopt the former and avoid the latter.

MARJANA MANTRA

Prayer for Purity of Body

Next in order is the purificatory hymn. The recitation of which urges the devotee to rouse each sense-organ to its normal function or activity as it enjoins a prayer for the correct and right use of each bodily organ. One has always to remember that our miseries are of our own making and those who want to avoid them must first control their senses and guide them unto nobler, higher and purer purposes.

Take again some water in the left palm and, dipping the two middle fingers of the right hand, sprinkle water over the various organs with the recital of the undermentioned mantras as indicated hereunder).

3. Om Bhuh Punatu Shrasi (head)
Om Swah Punatu Kanthe (throat)
Om Mahah Punatu Hridaye (heart)
Om Janah Punatu Nabhyam (naval cord)
Om Tapah Punatu Padeyoh (feet)
Om Satyam Punatu Punah Shirast (head)
Om Kham brahma Punatu Sarvatra (the whole body)

May the Supreme Being, the Great Lord, the Source of Energy and Light, purity and strengthen my brain (powers of understanding), my eyes (powers of vision). my throat and my speech, my powers of heart, my procreative powers, my legs (feet) and the entire body to perform its no mal functions and activity in the service of Humanity !

The devotee is reminded in this hymn, that the body is the Temple of the Lord and its organs and powers are to kept in the highest efficiency. One is to devote his entire energy to the building up of a sound mind in a sound body. The secret of life lies in this and this alone Those who believe prayer to be a passive contemplation must understand that the Vedic prayer is active in its nature and prescribes a life of ceaseless activity both in his individual capacity and as well as in the capacity of his being a member of his community. Prayer, like education, aims at good citizenship.

In these hymns we pray for the strength of our bodily organs and also for their keeping in strict discipline Strength with discipline leads us to glory, but without discipline it drives us to despair and destruction. A man with strong and healthy organs can glorify God by leading a life of discipline and self-control. Injustice and tyranny are born of indiscipline But glory and good name come to those who make the best use of their strength under the laws of strict discipline and selfcontrol.

We pray to God to allow us a store of strength to strengthen these sense-organs and make them our allies. Our life should become miserable if our organs do not act as our allies but act as our enemies. Our hands and feet, our eyes and ears, while playing the role of an enemy bring havoc to us. Erring organs lead us hellward. While they act as our allies they lead us heavenward.

Our Prayer for bodily strength and vigour will be effective only when we see that :—

1. We keep our sense-organs strong and unerring.
2. We keep them always engaged in healthy activities.
3. We keep them pure and clean by withdrawing them from unclean and profane pursuits.

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

श्री सूबे सिंह आर्य मुकलान के गृह प्रवेश यज्ञ में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का हुआ विशेष उद्बोधन

1 जनवरी, 2021 को युवा नेता श्री सूबे सिंह आर्य मुकलान द्वारा सैक्टर–15, हिसार में अपने नये घर का गृह प्रवेश यज्ञ आयोजित किया गया जिसमें सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को विशेष रूप से आमंत्रित कर उपस्थित जन–समूह को विशेष सम्बोधन से लाभान्वित कराया गया। यज्ञ का अनुष्ठान ब्रह्म महाविद्यालय हिसार के आचार्य डॉ. प्रमोद जी के ब्रह्मत्त्व में सम्पन्न हुआ और हरियाणा सरकार के पूर्व मंत्री, आर्य समाज हिसार के पूर्व प्रधान श्री हरि सिंह सैनी, हरियाणा सरकार के पूर्व वित्तमंत्री प्रो. सम्पत सिंह, सेठ बजरंग लाल आर्य, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. खोखर तथा अन्य गणमान्य महानुभावों ने यजमान दम्पत्ति को आशीर्वाद दिया।

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने जहां श्री सूबे सिंह आर्य उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पूनम व उनके सुपुत्र चि. आदित्य को अपना आशीर्वाद दिया वहीं पंचमहायज्ञों को गृहस्थ जीवन का आधार बताते हुए संक्षिप्त व्याख्या की। उन्होंने कहा कि इस नये घर में सुख, समृद्धि एवं यशकीर्ति इस परिवार के लिए सदैव बनी रहे तथा निरन्तर इसमें वृद्धि होती रहे। इसके लिए आवश्यक है कि ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ तथा बलिवैश्वदेव यज्ञ नियमित रूप से किये जायें। उन्होंने कहा कि जिस घर में इन महायज्ञों का प्रचलन होता है, वे घर सदैव उन्नति करते हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने उपस्थित सभी सुधीजनों से अपील की कि वे अपने जीवन को सार्थक एवं सफल बनाना चाहते हैं तो पंचमहायज्ञों को अपनायें। स्वामी जी ने नशे की बढ़ती प्रवृत्ति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि आज समाज में शराब का प्रचलन तीव्र गति से बढ़ रहा है। इससे परिवारों का ताना–बाना बिखरता जा रहा है और युवा वर्ग पतन के गर्त में गिरता जा रहा है। अतः यह आवश्यक है कि परिवारों में बच्चों को प्रारम्भ से ही अच्छे संस्कार देकर नशे, विषय आदि बुराईयों से दूर रहने की प्रेरणा दें। बच्चों के ऊपर विशेष दृष्टि रखें और वर्तमान समय में एन्ड्रायड टेलीफोन के माध्यम से जो अश्लीलता प्रोत्साहित–प्रचारित की जा रही है उससे बच्चों को बचाना अत्यन्त आवश्यक है। स्वामी जी ने उपस्थित सभी लोगों को पंचमहायज्ञ करने का संकल्प भी कराया। श्री सूबे सिंह आर्य ने स्वामी आर्यवेश जी तथा उपस्थित अन्य गणमान्य महानुभावों का विशेष आभार व्यक्त किया।

।।ओ३म्।।
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य
(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)
(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

मात्र 3100/– में

एक वेद सैट मात्र 3100/– रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर
लागत मूल्य में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।
अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 ● दूरभाष :– 011–23274771

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।